

राष्ट्रिय
श्री ५४११५१
श्री ५४११५१
श्री ५४११५१

A

19 x 15.5 cm Page

2801

ASHA ARCHIVES

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

की सी दम से आने वाले म

हुला मेरी मदत की की सी दम मे आने वाले म
मुस की लमे आने वाले में हुला मेरी मदत की + आज तन में नल
जी हु ई दी को उ रा कर ले जा ई की सी आ पर त मे आने वाले म
हुला मेरी मदत की ॥ राजा मली मली वें गलावती पुत्र की वरदा कर ले
गई हा पा पाते मे आने वाले म हुला मेरी मदत की ॥
॥ ते स जी री दी सी दी दे ह म को ॥ तु मा री न त मे स न
मे आ मे न म ये ई धा पर ले पा ये गने स जी री दी सी दी दे ह म को

राजा वरदही अवसुत लीजे हो माहा राज प्री ठी वी का हाये की नम
मे चरती का हाये की नम ये ॥ १॥ सात्ये जुग मे हरि नाम क सराज चारु
जुग सही अतिव लवी रा माहा वर म नू त्री ठी को ये क ल गार्ड ॥ ११ ॥ जी
ता जुग मे दु जो चर राजा ह सती न पुर सही अतिव लवी रा माहा वी रे च
ई ठी को ये क ल गार्ड आव ॥ २॥ द्या पर जुग मे रा क ने म ये राजा लई का
को ट सही ये क ल गार्ड आव ॥ ३॥ लाव पुत्र सवा ला ये ना ती ठी को ये क ल गार्ड आव ॥
॥ ३॥ कली जुग मे श्री कृष्ण म ये रा मे चर सही क ह सही
मा ही वी द ह स की ये है गो पी ती व ली म ये ॥ ४॥ सात्ये श्री ती का म
र कली जुग चारु जुग सही का हे क वी रे ली मा हू सा जु ह ई स ये
क ल गार्ड आव सु ली ली ये हो मा हा राज ॥ ५॥

१॥ सुनी जे जे काली सरवतु भारीति सुवा सरप
 द अरज हमा रि ॥ १॥ कोटी जेति र की ते जे जे रवि
 चंद्र कोति मुखव न प्रकासि अं ॥ अं ॥ अं ॥ अं ॥
 कवी ला सी सिर पर र र म क र म दि भारी ॥ १॥
 म दि म ये जे ति के ॥ १॥ म ति वि वि हार चं ॥
 का ल र वि को टी मु गु र मु गु र मु गु र मु गु र
 न ला व र सु र पु नु म दे वा व ल कि ॥ १॥ म म म
 प त ति म म म म चारी प पु अ म व व र सि कार

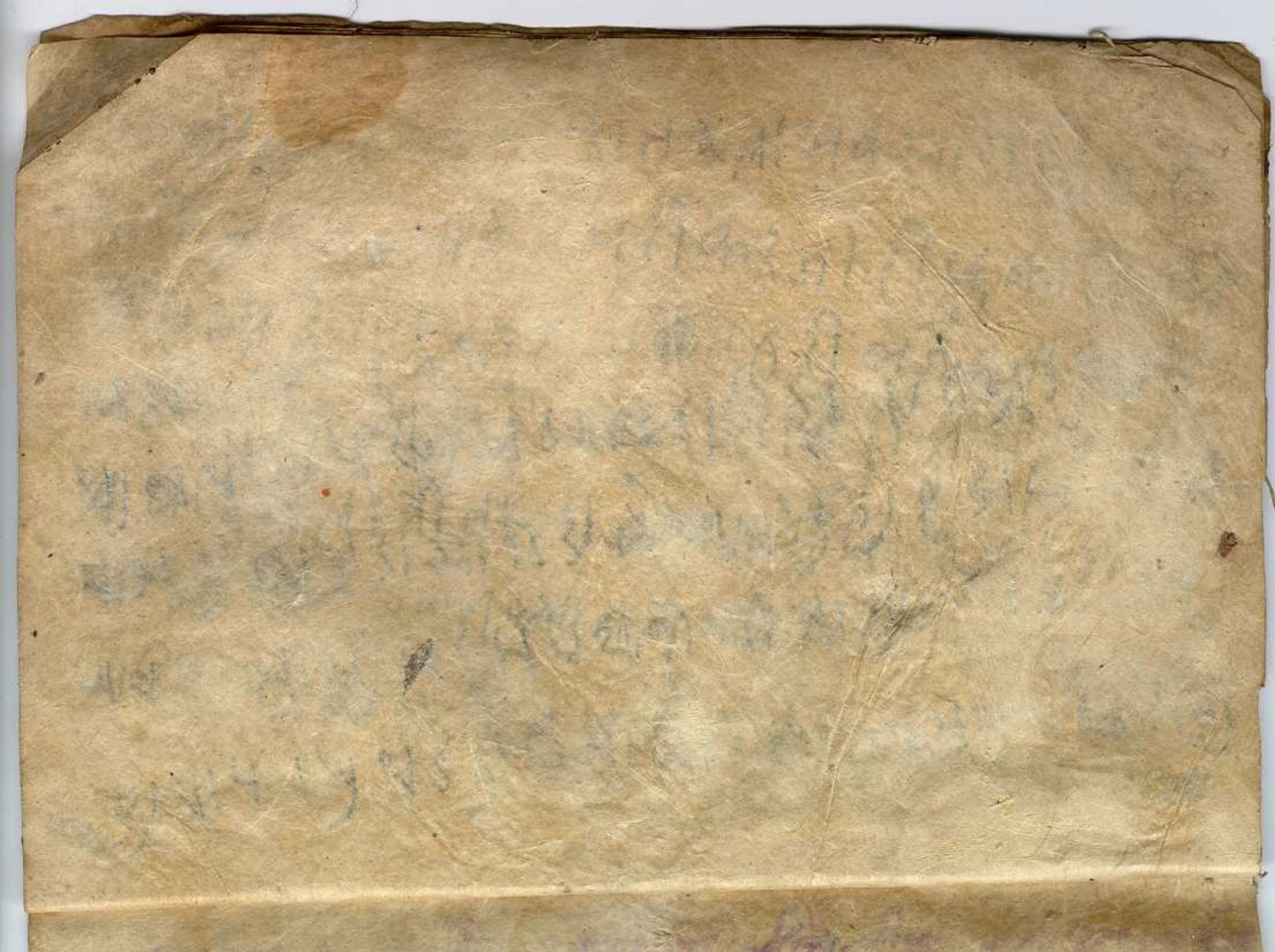
कोरि मुंड माला अंगति पधारि धैत पिठ पारक
 रत सवारी ॥ ३॥ चंद्र मुद्र मयु सुभ नि सुभ मरु रक्त वि
 जस वरुण उजारी ॥ चौध भुवन जग के अधिकारी दास
 चरन जग के रवारी ॥ ४॥ विविध नाम मजि न के उ
 न कि ति आ हो कालिक रता मये मुनि सत सत
 अपराध छोरी करत मा परतु मदा स विवारी ॥ ५॥
 जग मज वरुण ह मवर दाहि सागत चरी व के जी ज के
 अग मा दी पार न भुवन सिव सरुन का दी को ॥
 जगत देव जीव की नाम पुकारो जग शरी गिरि

[illegible]

राजकुमारी ॥६॥ विविध नाम जिनके
न किर्ति अहो कालि कर नाम य सति प्राप्त
सहस्र अपराध क्षमते ही कारमा कानुमंडा सिद्धी
प्राप्ती ॥७॥ जन्म जन्म हम को वर दाती युगति
गति गति ॥ श्रीने यस्य माति श्री अम वने रिप कुरु
रौ मि देव त भगत आवर सुभ कालि ॥ हे जग दामोदर
श्री भुवन श्री ॥ करत कृपा न हो करत विरत ॥
हे जग दामोदर श्री भुवन श्री ॥ करत

[illegible]

को ना त प ले न र दे ह पा आ ॥१॥ अ न जं न ह्य पती
ल व ठा आ मो सर स ह जं गु मा या न क त क पा इ
ज म दे पी दे रा आ मु त म ज्ञा न ले रो वी सा त ॥ आ ॥२॥
गी ध न का ल को अ स व री ह री क र जो री न ल
गा आ ॥३॥



Handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript page. The text is heavily faded and illegible due to significant water damage and staining, particularly along the left and bottom edges. The script appears to be a form of Sanskrit or Hindi. The page is aged and discolored, with visible fibers and some small holes.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कृष्णसुखाय नमः ॥ कृष्णसुखाय नमः ॥
श्रीगुरुमन्त्रमाह ॥ गुरुं श्रीं गुरुं नमस्कृत्य ॥ कृष्णं नमस्कृत्य ॥ कृष्णं नमस्कृत्य ॥
श्रीगुरुमन्त्रमाह ॥ गुरुं श्रीं गुरुं नमस्कृत्य ॥ कृष्णं नमस्कृत्य ॥ कृष्णं नमस्कृत्य ॥
श्रीगुरुमन्त्रमाह ॥ गुरुं श्रीं गुरुं नमस्कृत्य ॥ कृष्णं नमस्कृत्य ॥ कृष्णं नमस्कृत्य ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगुरुमन्त्रमाह ॥ गुरुं श्रीं गुरुं नमस्कृत्य ॥ कृष्णं नमस्कृत्य ॥ कृष्णं नमस्कृत्य ॥

रागशस्त्र ॥ ॥ नौसर ननुरंगम लीमेलीयाः नलोपेली याईआ
या ॥ धृ ॥ प्रयमवी दालनादसा मवलरु एन मूलमोली रनतो लन
कीताहापर ननामुमेर नकी ॥ २ ॥ प्रतीतमो नह दे छु बहूला जीरले
हातीन कोशक कक आरुना भाजषकी ॥ २ ॥ सकलदा मोहदुम के देहा
बना कीमेना नान श्री थाई मुषफु जी लेवी आरु लो जे नही ती आ
नी आनी नूनी नूनी नूनी भीया ॥ ३ ॥ त्री वी दी वादी मासा त्री ननु मे नमे
अंकलगे प्रदीना परन पर नमे घर नमे घर नके प्रन परी तजरी तज
लागेहु काहु कीतम अहू चर जे सतास ती दीपनमे अथ सी दी नव
ती दी हो सो दी सा ॥ ४ ॥ मे धार लुफ्ठी कुरु महु सी माका दी दी भांकी
दी भांकी दी गी दी ना दी गी दी ना घन क घन आही लेंग राही लेंग

श्री

राममृतश्री = माइभगवती असुरचंडी नी जगतको प्रतापवती ॥ १॥ श्री ॥
हवाहीना पुरु धारनी भुकी भुवी केदायनी ॥ ~~समस्तमानव~~ रत्नकर
नी १००० स्वपुत्री असुरकुत सवनासीनी ॥ ११॥ मही समदीनी
ती सुत धारनी भुतगन संगकासीनी ॥ सनमानकी कमाका
रनी भवकी पुवनीवासी ॥ १२ ॥

सुभके १००० तगरवरतारनातागाइहे ॥ १३॥ कमल
थे १००० साजहे १००० साजहे १००० मधुरकीये ॥ असुर
सं सवमा १००० मधु मुक्त माहाहा १००० ॥ १४॥ की दुपर
वस्तु १००० माइरूप जेवना कही ॥ १५॥ का १००० का अवता
ही १००० प्रा १००० असुरके १००० तीये ॥ १६॥

पत्रहीमै २९ प्रगातु से कृत मा त्रीगा ६ को मद्राकार
स्थान पत्रही कृता त्रिखान को से आ ९ वागाम त्रीर ही कृता

पुठे म अ व तार ना रा व न कु ह तु से ५ ही न का ही स हा य शि
॥ द्वत्र पती जु से ने पा न क पा स य य र जे पा से वी ॥ ११ ॥
ही ही प्रान स मान का सी दित स ज र्ग ना य मे न अ दे से

॥ मे व न अ दे से वा प ही ने रूप पा के वी त अ ती प्रेम रा ॥ १२ ॥
थु गु ही प्रका र न र जे मो म त व पा को र ती त से त धर्म न
कु प न स पा क क र द्वा य क मे व म पुत्र स मान ॥ १३ ॥

[illegible]

श्री.

राग मल्लशी ॥ १ ॥ मारि मागवनी असुरवे
दीनि जगाको घनिआत्मनी ॥ ॐ ॥ हिमि
वाहिनी सरु वारनी अनी अनी वर
दायनी ॥ रात वरनी दम्बर वा अनी ॥ १ ॥
रुद्र लखनी अनी ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
नीरु लखनी अनी ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
रुद्र माननी कथा करनी अनी को दुखनी
वारनी ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥



2801	MSHA ARCHIVES



12